ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

वर्ष 6, अंक 8, मार्च 2023 ● ₹45

ज़िन्दगी का बायस्कोप

सिनेमानामा

फ़िल्म इंडस्ट्री की इबारत

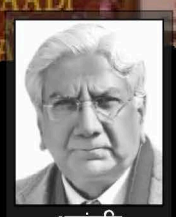

श्रद्धांजलि

ISSN 2356 - 3838
Licence N. F2(P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष-6,अंक-8, मार्च, 2023
मासिक, द्विभाषिक/हिंदी-अंग्रेजी

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर, लेआउट, कला पक्ष
शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, तीसरी मंजिल, गली नंबर 2
प्रताप नगर, मयूर विहार
फेज -1, दिल्ली - 110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये
(डाक खर्च अतिरिक्त)

पत्रिका के डिजिटल संस्करण नॉटनल (www.Notnul.com) से खरीद सकते हैं।
संपर्क - **9313677771**
Email:Pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति तथा लेखक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(सभी चित्र इंटरनेट से साभार)
सभी पद अवैतनिक

अनुक्रम

05 संपादकीय

06 सिनेमा व सांस्कृतिक पत्रकारिता का एक युग खत्म

10 जावेद अख्तर की दिलचस्प आत्मकथा

13 इरफ़ान की यादों को समेटती पुस्तक

15 भूमंडलीकरण के दौर में बदलता सिनेमा

16 फिल्मों के माध्यम से गंभीर विचार विमर्श

20 कहीं बेखयाल होकर यूं ही छू लिया किसी ने

22 मनमोहन चडढ़ा की पसंदीदा सिनेमा पुस्तकें

25 निष्पक्ष सिनेमा पत्रकारिता का उत्कृष्ट नजीर

28 खुद को जितना खोल कर दिखा सकता था, दिखाया

33 सिनेमा विषयक बांग्ला किताबें और उसका बाज़ार

40 भारतीय सिनेमा के संगीत के सुनहरे दौर की दास्तान

42 'मधुमति' ने पैदा की हिंदी फिल्मों के प्रति दीवानगी

46 सिनेमा के साथ है किताब

54 भूले बिसरे संगीतकार चित्रगुप्त

55 राज बब्बर : रंगमंच से सिल्वर स्क्रीन तक

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं, 2, प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091 से प्रकाशित। **संपादक - संजीव श्रीवास्तव।** चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ / 439, नारायणा विलेज, नई दिल्ली - 110026 से मुद्रित।

शरद दत्त को पिक्चर प्लस परिवार की ओर से सादर नमन

फिल्म इतिहासकार, संगीत समीक्षक, कला प्रेमी, राष्ट्रपति स्वर्णकमल प्राप्त फिल्ममेकर

हर किताब एक सिनेमा है

शरद दत्त जी का नाम 'पिक्चर प्लस' के प्रधान संपादक के तौर पर जुड़ा था लेकिन उनकी विराट शख्सियत की यह एक छोटी सी पहल थी। उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलू थे। वह हिंदी सिनेमा के इतिहासकार थे, संगीत समीक्षक थे, कला पारखी थे, मीडियाकर्मी थे, डॉक्यूमेंट्री निर्माता थे आदि। सिनेमा पर भी साहित्यिक और रचनात्मक लेखन हो सकता है, इस दर्शन को शरद दत्त जी ने स्थापित किया था। सिनेमा पर उनकी पुस्तकें, विभिन्न कला व संस्कृति जगत की नामचीन हस्तियों के ऊपर उनके बनाये हुए वृत्त चित्र कालजयी और धरोहर हैं। वर्तमान और नई पीढ़ी के लिए वह मार्गदर्शक की भांति है। इन्हें संरक्षित करने की दरकार लंबे समय से रही है। लेकिन अफसोस कि इस दिशा में सक्रिय पहल शून्य रही। अगर उनकी सक्रिय कालावधि में ही संग्रहण का काम हो गया होता तो शायद वह भी एक बड़ी उपलब्धि होती। जैसे कि उनका लेखन या कि उनका फिल्म निर्माण।

दो साल पहले जब 'माधुरी' के संस्थापक-संपादक अरविंद कुमार जी का निधन हो गया था तब भी यही प्रश्न सामने था कि उनके बिखरे पड़े वृहत् लेखन का संकलन और साथ में उसकी सहज उपलब्धता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। ताकि सिनेमा पर लेखन-पठन के रसिकों को सुलभता हो। हालांकि अरविंद कुमार अपने लिखे को डॉक्यूमेंट करने में सक्रिय रहते थे। 'पिक्चर प्लस' के ब्लॉग पर उन्होंने हमारे जितने भी सवालों के जवाब दिये उन सभी को उन्होंने सिलसिलेवार तरीके से डॉक्यूमेंट करके रखा था और मुझे दिया भी था। उनमें चुनिंदा अंश 'माधुरी काल' नाम से एक पुस्तक नॉटनल पर प्रकाशित है। लेकिन 'माधुरी' के पन्नों पर अरविंद कुमार जी के अपने नाम और कुछ अन्य नामों से लेखन का जो विपुल भंडार है, वह आज के पाठकों से वंचित है। कई बार सिने रसिक उसे शिद्दत से खोजते हैं। कुछ ने अपने-अपने घर में 'माधुरी' का निजी संग्रहालय बना रखा है। लेकिन उनकी सहज उपलब्धता कैसे हो, इसके प्रति ध्यान देने की दरकार हमेशा से रही है।

मित्रो, 'पिक्चर प्लस' का यह अंक पहले से सिनेमा पुस्तकों पर प्रस्तावित था। सोचा यह गया था कि पिछले करीब एक दशक के दौरान सिनेमा पर जितने भी महत्वपूर्ण लेखन हुए हैं, उनकी अधिकतम जानकारी यहां प्रस्तुत की जा सके। इसके लिए हमने लेखकों, समीक्षकों तथा प्रकाशकों से संपर्क साधा था। निश्चित समय के भीतर जहां-जहां से यथायोग्य रचनात्मक सहयोग हो सका, उन्हें यहां के पन्नों पर समेटने का प्रयास किया गया है। हम सबका आभार व्यक्त करते हैं।

मित्रो, 'पिक्चर प्लस' का अपना एक मिशन है। हमें बार-बार यह कहने की जरूरत आन पड़ती है। 'पिक्चर प्लस' का मिशन फिल्म पत्रकारिता की गरिमा को पुन: स्थापित करना है। बड़े व्यावसायिक घराने जो काम नहीं करना चाहते, हम उसे शिद्दत से करना चाहते हैं। जब से पत्रिका निकली है, इसका रिस्पांस उत्साहित करने वाला रहा है। हमें दो सौ फीसदी समर्थन मिला है। हमें भी इन समर्थनों की गरिमा का ख्याल रखना है। अरविंद कुमार, शरद दत्त, जयप्रकाश चौकसे जैसी शख्सियतों ने फिल्म पत्रकारिता को जो आयाम दिया है, वह केवल नमन करने भर के लायक नहीं है। उनमें गोते लगाकर जीवन और समाज को भी समझने की जरूरत है। क्योंकि सिनेमा जीवन और समाज से ही है। वह बाग बगीचों या आसमानी दुनिया की फैंटेसी नहीं है। कमलेश्वर जी कहा करते थे-सिनेमा पर्दे पर देखा जाने वाला सामाजिक साहित्य है। और किताबें उसका दस्तावेजीकरण। यहां हर आने वाले चले जाते हैं लेकिन जाने वाले अपनी किताबें, अपना सिनेमा छोड़ जाते हैं। उनकी किताबें और उनका सिनेमा ही उनके नाम को सालों साल तक जीवित रखता है।

पत्रिका का नया अंक कैसा लगा, जरूर बताइएगा।

अपना स्नेह और सहयोग बनाए रखें।

सादर। •

आपका संपादक
संजीव श्रीवास्तव